एक डोली चली एक अर्थी चली.....

तर्ज – एक तू जो मिला सारी दुनिया मिली

एक डोली चली एक अर्थी चली, फर्क दोनों में क्या है बता दे सखी ।

चार तुझमे लगे चार मुझमे लगे,
फूल तुझपे चढ़े फूल मुझपे चढ़े,
फर्क दोनों में क्या है बता दे सखी,
तू पिया को चली मैं पिया से चली,
एक डोली चली एक अर्थी चली,
फर्क दोनों में क्या है बता दे सखी।।

मांग तेरी भरी मांग मेरी भरी,
चूड़ी तेरी हरी चूड़ी मेरी हरी,
फर्क दोनों में क्या है बता दे सखी,
तू जहाँ को चली मैं जहाँ से चली,
एक डोली चली एक अर्थी चली,
फर्क दोनों में क्या है बता दे सखी।।

तुझे देखे पिया तेरे हंसते पिया,
मुझे देखे पिया मेरे रोये पिया,
फर्क दोनों में क्या है बता दे सखी,
तू विदा हो चली मैं अलविदा हो चली,
एक डोली चली एक अर्थी चली,
फर्क दोनों में क्या है बता दे सखी।।

लकड़ी तुझमे लगी लकड़ी मुझमे लगी,
लकड़ी वो भी सजी लकड़ी ये भी सजी
फर्क दोनों में क्या है बता दे सखी,
तू लकड़ी से चली मैं लकड़ी में चली
एक डोली चली एक अर्थी चली,
फर्क दोनों में क्या है बता दे सखी।।

जाति न पूछो साधु की, पूछ लीजिये ज्ञान ।
मोल करो तरवार का, पड़ा रहन दो म्यान ।।